

CIRCULAR CITY



Maja Djolić, Aleksandra Vučinić, Nataša Atanasova and Günter Langergraber

Book title: Circular City

Authors: Maja B. Đolić, Aleksandra Vučinić, Nataša Atanasova and Günter Langergraber

Translated into Hindu by: Biplav Pagéni, MPhil in Engineering for Sustainable Development

Illustrations: Ana Popović (Inst@ananana_14, @ananana_design)

Illustration of Cover page: Tea Nikolić (Inst@prismriver_)

©Circular City COST Action CA17133

Grant Holder Institution:

Universität für Bodenkultur Wien (BOKU)

Department of Water, Atmosphere and Environment

Institute of Sanitary Engineering and Water Pollution Control

Muthgasse 18, 1190 Vienna, Austria

Chair of the Action:

Dr. Günter Langergraber

Head, Department of Water, Atmosphere and Environment

guenter.langergraber@boku.ac.at

Co-Chair of the Action:

Dr. Nataša Atanasova

University of Ljubljana, Faculty of Civil and Geodetic Engineering

natasa.atanasova@fgg.uni-lj.si

Reuse is authorized provided the source is acknowledged. It can be used for educational purposes for the appropriate reference.

This publication is based upon work from COST Action CA 17133 "Implementing nature based solutions for creating a resourceful circular city (Circular City Re.Solution)" supported by COST (European Cooperation in Science and Technology).

COST (European Cooperation in Science and Technology) is a funding agency for research and innovation networks. Our actions help connect research and initiatives across Europe and enable scientists to grow their ideas by sharing them with their peers. This boosts their research, career and innovation.

www.cost.eu



COST Action CA17133

Grant Holder Institution:



एक सुहाना दिन।

अपने स्कूल के दिन याद करते हुवे, फातिमा और ललित बचपन कि बातें कर रहे थे। वो यादगार पल और वो शरारत के दिन पे हस्ते हुवे, शहर कि नदि के आनन्द लेते हुवे, अपने घर के रासते पर चल रहे थे।

नदीकी खुशनुमा लहरोंको देखते हुए फातिमा ने ललित से कहा: "कया तुम जानते हो कि पानी हमारे शरीर के लिए कितना महत्वपूर्ण है? मानवका शरीर ७०% पानी से बना हुवा है"।



हम इनसान, खाने के बिना २० दिन तक जी सकते है, पर पानी के बिना हम सिफर ३ दिन रह सकते है। पानी हम सब जीवित परणियो के लिए कितना महत्वपुणर् है, ये हम जनाते भी नही है।





"हम लापरवाही से घरों और उद्योगों से गंदा पानी को सीधे प्राकृतिक जल, नदियों और झीलों में छोड़ देते हैं। ऐसा करके, हम पानी में रहने वाले सभी जीवों को खतरे में डाल रहे हैं: जैसे कंकड़े, मछली, पूरे जलीय पौधे की दुनिया, साथ ही जीवित ऐसे प्राणी जो पानी पर निर्भर हैं, लेकिन उसमें नहीं रहते सभी को खतरे में डाल रहे हैं"।



"इसी तरह, किनारे पर मेंढकों के लिए भी ऐसा प्रदूषित पानी अच्छा नहीं है"।



“यह बेहतर हो सकता है अगर हम इस्तेमाल किए गए पानी को जलमागोरं में डालने से पहले शुद्ध कर लें। इस तरह, हम आने वाली पीढ़ियों के लिए सतह और भूमिगत जलको संरक्षित कर सकते हैं। पानी पृथ्वी ग्रह पर सबसे महत्वपूर्ण संसाधनों में से एक है।”



फातिमा कि बातें दिलचस्पी से सुनते हुए, ललित अचानक फिसल ने वाला था पर सही समय पर फातिमा ने अपना हात आगे बड़ाकर उसे बचा लिया।



ललित अपना फिसलने कि वजे धुडने के लिए पिछे मुडते हुवे उसने फूत्पाथ पे एक प्लास्टिक बोटेल पडा हुवा देखा।



"एसे कैसे फूत्पाथ पे प्लास्टिक कचरा कोइ फेक सकता हैं, किसिको चोट लग सकित हैं एसे , समझ नही आता मुझ।", चिड़ते हुवे ललित ने फातिमा से कहा।

क्या उस बेवकूफको पता भी हैं, प्लास्टिकों परकृति मे घुल्ने के लिए १०० साल से भी ज्यादा लगता हैं।



प्लास्टिक को रिसाइकिल किया जा सकता है, और एक नया सामान बनाया जा सकता है। और यह बिल्कुल भी मुश्किल नहीं है। लोगोंको केवल sahi स्थान, कंटेनर या रीसाइकिलिंग बिन में प्लास्टिक कचरेको फेंकना चाहिए। मैं हर समय ऐसा करता हूँ और मेरे लिए कचरेको कागज, धातु, प्लास्टिक और कांच के कंटेनरों में छांटना मुश्किल नहीं है। जब मैं ऐसा करता हूँ तो मुझे अच्छा लगता है। मुझे पता है कि मैंने अपने लिए और पर्यावरण जिसमें मैं रहता हूँ, दोनों के लिए कुछ अच्छा और उपयोगी किया है।"





इस तरह, हम जलवायु परिवर्तन पर अपने प्रभावको कम कर सकते हैं। अत्यधिक सूखा और बाढ़ का कारण ही मानव गतिविधियाँ हैं जो जलवायुको बदल रहे हैं। इन परिवर्तनों से कुछ पौधों और जानवरों की प्रजातियाँ भी गायब हो सकती हैं", ललित ने निष्कर्ष निकाला।

"फातिमा, हम पराकृतिक संसाधनोंका अत्यधिक उपयोग कर रहे हैं: पानी, अयस्क, रेत और बजरी, जंगल... हमारे पास केवल एक ग्रह है, और अभी हम इसका उपभोग कर रहे हैं जैसे कि हमारे पास दो हों। हम लंबे समय से शर्य पर रह रहे हैं।" और हम आने वाली पीढ़ियों से संसाधन उधार लेकर हैं। हम उनके लिए किस तरहका भविष्य छोड़ रहे हैं, अगर हम उस वाहि एकमात्र घरको नष्ट कर दें जिसमें वे रह सकते हैं?"





जब ये बात कर रहे थे, तब बारिश होने लगी, इसलिए फातिमा और लिलत एक पेड़ की चोटी के नीचे छिपने के लिए नजिदकके एक पाकर की ओर भागे।

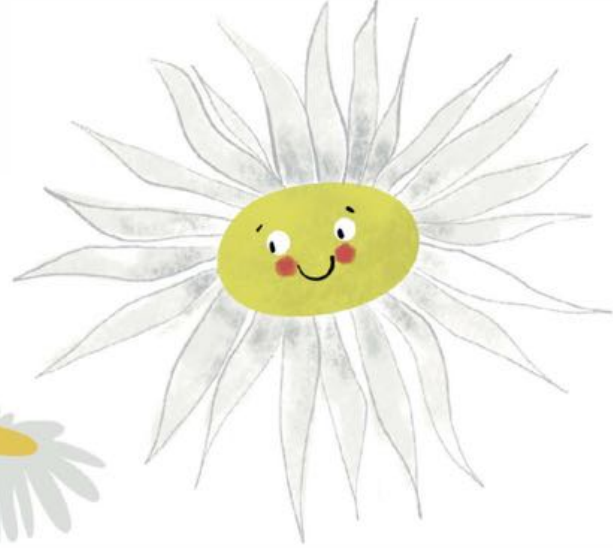


फातिमा ने ललित से कहा: "मैं परकृति से बहुत प्यार करती हूं, लेकिन मैं अपने शहर से भी प्यार करती हूं।" परकृति में, मुझे पेड़, घास और हरियाली पसंद है, और शहर में, मुझे मेरा स्कूल, दोस्त, साइकिल चलाना, गेंद के खेल पसंद हैं... मुझे सबसे ज्यादा अच्छा लगेगा अगर मैं परकृति और शहर को जोड़ सकूं, एक पराकृतिक शहर की तरह।"



ललित फातिमा के सवाल का जवाब देते हुवे काहा "आजकल, यह आसानी से पराप्त किया जा सकता है।" यदि हम सभी पर्यास करें तो हम एक हरे भरे शहर में रह सकते हैं। क्या तुम्हे पता है, कि दीवारें और छतें भी हरी हो सकती हैं। अपने पसंदीदा पौधे को दीवार या छत पर उगाने की कल्पना करें। तुमहारे आसपास की दीवारों या छतों पर उगने वाली स्वादिष्ट लाल स्ट्रॉबेरी। क्या यह अद्भुत नहीं होगा?"





"वाह ये तो बहुत हि बडीयाँ होजाएगा," फातिमा ने उत्साह से कहा। मे अपने मनपसंद फूल लगाउंगी - गुलबहार मेरी माँ के लिए, मै सुगंधित जडी-बूटियाँ, अजवायन, और तुलसी लगाउंगी, वह उन्हें अपने खाना में बहुत उपयोग करती है। यह बहुत अच्छा होगा!"



"हम अपने पसंदीदा पौधे उगा सकते हैं, और हरी दीवारें और छत के बगीचे हमें जलवायु परिवर्तन से बचा सकते हैं।" हमारा घर सदिर्यों में गमर और गमिर्यों में ठंडा रहता है। इस तरह हम ऊर्जा भी बचा सकते हैं और जलवायु परिवर्तन पर प्रभाव कम कर सकते हैं!"।



कुछ वक़्त मे, बारिश रुक गई फिर फातिमा और लिलत ने पाकर् मे अपनी सैर वापस शुरु किया थोडी हि दूर, उन्होंने अपने स्कूल के कुछ दोस्तों को देखा जो बैठके स्वस्थ फलोंका आनंद ले रहे थे।



फातिमा ने ललित से कहाँ: "क्या तुम्हें पता है कि दुनिया में उत्पादित भोजन का एक तिहाई भाग फेंक दिया जाता है?" सोचो अगर हम सारा बचा हुआ खाना जरूरतमंदों को दे दें या उसका इस्तेमाल किसी और काम में कर दें। यह केले का छिलका और सेब का अवशेष पौधों के लिए भोजन हो सकता है। परकृति हमें खिलाती है, और हम परकृति को खिलाते हैं। एक पुरा घेरा! दरअसल, परकृति के पास हर चीज का समाधान है। अच्छा होगा अगर हम अपने सभी दोस्तों को इस तरह जीने के लिए मना सकें, और उसमें सफल होने के लिए हमें खुद को शिक्षित करना होगा"।



ललित ने जवाब देते हुवे कहा "हां, मैं एक वास्तुकार बनना चाहता हूं और अपना खुद का हरी इमारत बनाना चाहता हूं"। फातिमा ने कहा: यह एक अद्भूत सोच है ! मेरी इच्छा एक जीवविज्ञानी बनके परकृति कि अध्ययन करने की है"। राहुल उनकी बातें सुनते हुवे, राहुल ने बोला- मैं एक इंजीनियर बनूंगा और अपशिष्ट जल उपचार संयंत्रों का निर्माण करूंगा!"। अपने दोस्तों की उत्सुकता से सुनते हुए, रेखा ने अंत में कहा: "और मैं एक अथर्शास्त्री बनाऊंगी ताकि मैं तुम सभी को एक सकुरलर शहर बनाने में मदद कर सकूं।







परकृति परेमियों के लिए सलाह।

- वीडियो देखकर जानिए सकुरलर शहरों के बारे में कुछ:
<https://www.youtube.com/watch?v=R3NXLb-W1pg>
- अजवायन और तुलसी के अलावा, कुछ अन्य सुगंधित जड़ी-बूटियाँ भी हैं। पता करें कि कौन से हैं और उन्हें अपने पड़ोस में देखें!
- अपने समुदाय में एक पेड़ लगाएं, उसकी देखभाल करें और उसका पालन-पोषण करें! इसे अपने साथ बढ़ने दें!
- कचरे को अलग करें और रिसाइकिल योग्य कचरे के लिए समर्पित कंटेनरों में इसका निपटान करें! हर दिन पर्यावरण के लिए कुछ उपयोगी करने की कोशिश करें!
- पानी बचाएं! यदि आप अपने दाँत बर्श करते समय पानी को बंद नहीं करते हैं, तो कुछ ही मिनटों में नल से लगभग 11 लीटर स्वच्छ पानी निकल जाएगा। अपने दाँत बर्श करते समय नल को बंद करना सुनिश्चित करें!
- बिजली बचाओ! जब आप कमरे से बाहर निकलें या उनकी आवश्यकता न हो तो रोशनी और बिजली के उपकरणों को बंद कर दें!
- पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में विषयों का अन्वेषण करें और अपने दोस्तों के साथ व्याख्यान और अपने छोटे पड़ोसियों के लिए व्याख्यान की व्यवस्था करें। इस किताब को इसमें आपकी मदद करने दें!
- परकृति में ज्यादा से ज्यादा समय बिताने की कोशिश करें। आनन्दित हों और हँसें!



छोटे जासूसों के लिए
- अंतर खोजें।





अपना सकुलरर ि
सटीका चितर बनाओ।

